بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in   KhulasaKhutba-03.06.2022   محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों पर चर्चा के अतंर्गत यमामा के युद्ध में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअीन के महान बलिदानों का अत्यंत ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 03 जून 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था तथा इस श्रंखला में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ लड़ाई का वर्णन हुआ था। उस युद्ध में अंसार का झंडा हज़रत साबित बिन क़ैस के पास था तथा मुहाजिरों का झंडा हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब के पास था। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब ने लोगों से कहा- ऐ लोगो, मज़बूती के साथ क़ायम हो जाओ, दुश्मन पर टूट पड़ो तथा आगे क़दम बढ़ाओ। फिर फ़रमाया- अल्लाह की क़सम मैं उस समय तक बात नहीं करूँगा यहाँ तक कि अल्लाह उन्हें पराजित कर देगा अथवा मैं अल्लाह से जा मिलूँगा, फिर आप भी शहीद हो गए। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के बारे में आता है कि आप हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सौतेले भाई थे। आरम्भिक इस्लाम लाने वालों में से थ, बदर तथा उसके बाद के युद्धों में शरीक रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के बाद आप तथा मअन बिन अदी अन्सारी रज़ीयल्लाहु अन्हु के बीच बन्धुत्व का सम्बंध स्थापित फ़रमाया था तथा दोनों ही यमामा के युद्ध में शहीद हो गए। यमामा के युद्ध में हज़रत ख़ालिद ने जब सेना को व्यवस्थित किया तो एक भाग का सेनापति हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब को बनाया तथा इसी प्रकार उस युद्ध में मुहाजिरों का झंडा भी आपके हाथ में था। आप झंडा लिए आगे बढ़ते रहे तथा बड़ी वीरता से लड़े यहाँ तक शहीद हो गए तो झंडा गिर गया। सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा रज़ीयल्लाहु अन्हु ने झंडा थाम लिया। इस टकराव में ज़ैद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने मुसैलमा के पक्के साथी तथा एक

अन्य वीर घुड़सवार जिसका नाम रजाल बिन अनफ़ुवा था, उसकी हत्या कर दी और आपको जिसने शहीद किया उसको मरयम हनफ़ी कहते हैं। इसके बाद वह मुसलमान हो गया और एक बार जब हज़रत उमर ने उसे कहा कि तुमने मेरे भाई की हत्या की थी तो उसने कहा- ऐ अमीरुलमोमिनीन! अल्लाह तआला ने मेर हाथों ज़ैद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को प्रतिष्ठा प्रदान की तथा उनके हाथों मुझे अपमानित नहीं किया अर्थात वे शहादत की मौत पा गए तथा मुझे इस्लाम की तौफ़ीक़ मिल गई है। जब ज़ैद की हत्या की सूचना उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु को पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया कि ज़ैद दो नेकियों में मुझसे आगे निकल गया, अर्थात मुझसे पहले इस्लाम क़बूल किया तथा मुझसे पहले शहीद हो गए। मालिक बिन नवेरा को जब हज़रत ख़ालिद ने मार दिया तो उसके भाई मुतम्म बिन नवेरा ने अपने भाई मालिक की हत्या पर दोहा पढ़ा। उसको अपने भाई से अति प्रेम था। एक बार जब हज़रत उमर से उसकी भेंट हुई तथा उसने भाई क शाक वाला दोहा हज़रत उमर को सुनाया तो हज़रत उमर ने उनसे कहा कि यदि मैं दोहा कहना जानता तो तुम्हारी भांति मैं भी अपने भाई ज़ैद के लिए दोहा कहता। इस पर मुतम्म ने निवेदन किया कि यदि मेरे भाई की मृत्यु इस प्रकार होती तो जैसी मौत आपके भाई की हुई है अर्थात शहादत वाली मृत्यु, तो मैं कभी भी अपने भाई की मौत पर दुःखी न होता। उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया- जितनी सुन्दर शैली में मेरी भाई की मृत्यु पर तुमने शोक प्रकट किया है अन्य किसी ने नहीं किया। हज़रत उमर फ़रमाया करते थे कि जब ठंडो हवा चलती है तो ज़ैद की याद ताज़ा हो जाती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतएव युद्ध गाथा चल रही है। मुसैलमा कज़्ज़ाब अभी तक डटा हुआ था तथा काफ़िरों के युद्ध का केन्द्र बना हुआ था। हज़रत ख़ालिद ने निरीक्षण करके बताया कि जब तक मुसैलमा का वध नहीं किया जाएगा युद्ध समाप्त नहीं होगा इस लिए हज़रत ख़ालिद ने उसकी हत्या कर दी। हज़रत ख़ालिद ने मुसैलमा को मुक़ाबले के लिए आवाज़ दी, वह भाग गया तथा उसके साथी भी भाग गए तो हज़रत ख़ालिद ने लोगों को पुकार कर कहा कि सावधान, अब आलस्य को भल मत करना, आगे बढ़ो तथा किसी को बच कर जाने न दो। इस पर मुसलमान उन पर चढ़ दौड़े। सहाबा किराम ने इस टकराव में धैर्य तथा दृढ़ संकल्प होने का ऐसा सबूत दिया जिसका उदाहरण नहीं मिलता तथा निरन्तर दुश्मन की ओर बढ़ते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने दुश्मनों के विरुद्ध विजय प्रदान की तथा काफ़िर पीठ फेर कर भाग खड़े हुए। मुसलमानों ने उनका पीछा किया तथा उनकी हत्या करते रहे और तलवारें उनकी गर्दनों पर चलाते रहे यहाँ तक कि उन्हें एक बाग़ में शरण लेने पर विवश कर दिया। यह अत्यंत विशाल बाग़ था जिसके चारों ओर दीवारें थीं। यह बाग़ युद्ध के मैदान के निकट ही था तथा मुसैलमा के स्वामित्व में था। मुसैलमा मज़्ज़ाब भी अपने साथियां के साथ उस बाग़ में चला गया आर उन्होंने बाग़ का द्वार बन्द कर लिया। सहाबियों ने चारों ओर से उस बाग़ को घेर लिया, मुसलमान कोई जगह तलाश करने लगे कि किसी तरह उस बाग़ के भीतर जाया जा सके परन्तु यह क़िले जैसा बाग़ था। बावजूद तलाश के उसके अन्दर जाने की कोई जगह नहीं मिल सकी। अंततः हज़रत बरा बिन मालिक जो हज़रत अनस बिन मालिक के भाई थे, ने कहा कि मुसलमानो! अब केवल एक तरीक़ा है कि तुम मुझे उठा कर बाग़ में फेंक दो, मैं अन्दर जाकर द्वार खोल दूँगा, परन्तु मुसलमान यह सहन नहीं कर सकते थे कि उनका एक उच्च स्तरीय साथी हज़ारों शत्रुओं के बीच अपने प्राण नष्ट कर दे। उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया परन्तु हज़रत बरा बिन मालिक ने आग्रह करना आरम्भ कर दिया तथा कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ कि मुझे बाग़ में फेंक दो। अंत में विवश होकर मुसलमानों ने उन्हें बाग़ की दीवार पर चढ़ा दिया। दीवार पर चढ़ कर जब हज़रत बरा बिन मालिक ने दुश्मन की भारी संख्या को देखा तो एक पल के लिए रुके, किन्तु फिर

अल्लाह का नाम लेकर बाग़ के द्वार के सामने कूद पड़े तथा दुश्मनों से लड़ते तथा वध करते हुए द्वार की ओर बढ़ने लगे, अंततः आप द्वार तक पहुंचने में सफल हो गए तथा बाग़ का द्वार खोल दिया। मुसलमान बाहर द्वार खुलने की ही प्रतीक्षा कर रहे थे, जैसे ही द्वार खुला वे बाग़ में दाख़िल हो गए तथा शत्रुओं का वध करने लगे। हज़ारों लोग मुसलमानों के हाथों वध कर दिए गए। मुसलमान मुर्तदों की हत्या करते हुए मुसैलमा कज़्ज़ाब तक पहुंच गए। वहशी बिन हरब जिन्होंने ओहद के युद्ध के अवसर पर हज़रत हमज़ा को शहीद किया था, मुसैलमा की ओर बढ़े तथा आपने वही भाला जिससे हज़रत हमज़ा को शहीद किया था, मुसैलमा की ओर फेंका और वह उसे जा लगा तथा दूसरी ओर से पार हो गया। फिर जल्दी से अबू दजाना उसकी ओर बढ़े, उस पर तलवार चलाई और वह धरती पर ढेर हो गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यमामा के युद्ध का विवरण एक अन्य स्थान पर बयान हुआ है जिसमें मुसलमानों की ओर से साहस एवं दलेरी का वर्णन इस प्रकार बयान हुआ है कि दोनों गिरोहों के बीच भीषण युद्ध हुआ यहाँ तक कि दोनों गिरोहों के लोग भारी संख्या में मारे गए तथा ज़ख़मी हो गए। मुसलमानों में सबसे पहले मालिक बिन औस शहीद हुए। क़ुर्आन के हाफ़िज़ भी भारी संख्या में शहीद हो गए। दोनों सेनाओं में घमसान की लड़ाई हुई यहाँ तक कि मुसलमान मुसैलमा की सेना में तथा मुसैलमा की सेना मुसलमानों की सेना से जा मिला। सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा ने अपनी आधी पिंडलियों तक गड्ढा खोदा, उनके पास मुहाजिरों का झंडा था तथा साबित ने भी इसी प्रकार का गड्ढा अपने लिए खोदा, उनके पास अन्सार का झंडा था, फिर उन दोनों ने अपने झंडों को अपने साथ चिमटा लिया यहाँ तक कि सालिम शहीद हो गए तथा अबू हुज़ैफ़ा भी शहीद हो गए। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा का सिर सालिम के क़दमों पर था और सालिम रज़ीयल्लाहु अन्हु का सिर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के क़दमों में था। जब सालिम शहीद हो गए तो झंडा कुछ देर उसी तरह पड़ा रहा, फिर यज़ीद बिन क़ैस ने, जो बदरी सहाबी थे आगे बढ़े और झंडे को उठा लिया यहाँ तक कि वे भी शहीद हो गए। फिर हकम बिन सईद बिन आस ने उस झंडे को उठा लिया तथा उसकी सुरक्षा में पूरे दिन लड़ते रहे फिर वे भी शहीद हो गए। वहशी कहते हैं कि भीषण युद्ध हुआ, तीन बार मुसलमानों के क़दम उखड़े, चौथी बार मुसलमानों ने पलट कर हमला किया और उनक क़दम जम गए तथा वे तलवारों के सामने डट गए। अल्लाह तआला ने हम पर अपनी सहायता नाज़िल की तथा बनी हनीफ़ा को अल्लाह तआला ने परजित किया तथा अल्लाह ने मुसैलमा का वध कर दिया। वहशी कहते हैं कि मैंने उस दिन अपनी तलवार ख़ूब चलाई यहाँ तक कि वह तलवार मेरे हाथ में दस्ते तक ख़ून से भर गई। हज़रत इब्ने उमर कहते हैं कि मैंने हज़रत अम्मार को एक चट्टान पर चढ़े हुए देखा, वे पुकार रहे थे कि ऐ मुसलमानों के गिरोह! क्या तुम जन्नत से भाग रहे हो? मैं अम्मार बिन यासिर हूँ, मेरी तरफ़ आओ। रावी कहते हैं कि मैं देख रहा था कि उनका कान कट कर लटक रहा था। अबू ख़शीमा नजारी कहते हैं कि जब मुसलमान यमामा के युद्ध वाले दिन बिखर तो मैं एक ओर हट गया तथा मेरो आँखों के सामने यह दृश्य है कि मैं उस दिन हज़रत अबू दजाना को देख रहा था। अबू दजाना पर बनू हनीफ़ा के एक दल ने हमला किया तो आप अपने सामने भी तलवार चलाते, अपने दाएँ भी तलवार चलाते तथा अपने बाएँ भी तलवार चलाते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस समय मैं पाकिस्तान के लिए दुआ करने को कहना चाहता हूँ, परिस्थितियाँ जो साधाणतः बिगड़ रही हैं वे तो हैं, अहमदियों की ओर फिर से ऐसे हालात में उनका ध्यान हो जाता है, विरोध बढ़ रहा है। पुरानी क़बरें उखेड़ने स भी वे नहीं रुके, अत्यंत दुष्ट प्रकृति के लोग हैं, अल्लाह

तआला उनकी पकड़ करे। इसी प्रकार अलजज़ायर के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, वे भी आजकल कठिनाईयों में घिरे हैं, अफ़ग़ानिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला सब पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल फ़रमाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस समय मैं कुछ मृतकों का वर्णन करना चाहता हूँ फिर उनकी जनाज़े की नमाज़ भी पढ़ाउंगा। पहला वर्णन मुकर्रम नसीम मेहदी साहब मुबल्लिग़ सिलसिला का है। पिछले दिनों उनकी उन्हत्तर साल की आयु में मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। यह 1976 में जामिअः से निकले, 83 ई. में इनको स्वीज़र लैंड मुबल्लिग़ के रूप में भिजवाया गया। 84 ई. में इनको नायब वकीलुत्तबशीर नियुक्त किया गया। 1984 में दिसम्बर के महीने में लंदन आए थे यहाँ पर प्राईवेट सैकरेट्री लंदन के पद पर भी सेवा का अवसर मिला। 1985 से 2008 तक मुबल्लिग़ के रूप में तथा इसके बाद मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा के रूप में सेवा करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ। इसी बीच कैनेडा के अमीर भी रहे। 2009 से 2016 तक मुबल्लिग़ इंचार्ज अमरीका के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 1986 में मिशन हाउस बैतुल इस्लाम के लिए 24 एकड़ ज़मीन ख़रीदी गई तथा उसको फिर आबाद भी किया गया। उस अवसर पर अनेक अहमदी कैनेडा से आकर यहाँ आबाद हुए तथा उन्होंने बड़ी सहायता की इन लोगों की, अनेक लोग उनके उपकारा के आभारी हैं। टोरेन्टो तथा कैलगिरी में दो विशाल मस्जिदों का निर्माण किया गया तथा अन्य जमाअतों में सैन्टर भी स्थापित किए गए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मेरा विचार है कि वैंकोवर की मस्जिद भो इनके ज़माने में बनी थी, अतएव ये दो मस्जिदें तो हैं। 2003 में इनके समय में ही अल्लाह तआला की कृपा से जमामिअः अहमदियः कैनेडा का शुभारम्भ हुआ। एम.टी.ए. नार्थ अमरीका स्टेशन स्थापित करने में भी आपने बड़ा सहयोग दिया है। अल्लाह तआला उनके ये सारे काम क़बूल फ़रमाए।

नसीम मेहदी साहब को आर्डर ऑफ़ ओन्टारियो का पदक 2009 में मिला जो कि राज्य का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है, यह एवार्ड किसी भी क्षेत्र में सफलता एवं स्मर्णीय योगदान पर दिया जाता है।

एक बार जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमुल्लाह ने अपने भाषण में स्वीज़र लैंड के मिशन को स्थापित करने के प्रयासों में नसीम मेहदी साहब का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला उन्हें जज़ा (अच्छा बदला) दे, मुझसे सुझाव लेने के बाद आठ हज़ार फ़ोल्डर स्वीज़र लैंड की पहाड़ियों में रहने वाले हर घर में पहुंचा दिए।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने अज़ीज़म मुहम्मद अहमद शारम रबवा तथा मुकर्रमा सलीम क़मर साहिबा पतनी मुकर्रम रशीद अहमद साहब मरहूम का सद्वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131